बिहार सरकार

गृह विभाग

प्रतिवेदन

2010-2011

गृह विभाग

बिहार के लोगों ने सुशासन और न्याय के साथ विकास को भारी जनादेश के साथ संपुष्ट किया है। स्वतंत्र, स्वच्छ और शांतिपूर्ण चुनाव, जिसमें महिलाओं के मतों की संख्या में 32 लाख से अधिक की बढ़ोतरी हुई, हमारे निरंतर आंतरिक सुरक्षा का सुधार परिलक्षित करता है।

पुलिस

विगत वर्षों में, समाज के सभी वर्गों का पुलिस पर विश्वास बढ़ा है। आम जनता में आत्म विश्वास का संचार हुआ है। बिहार में विधि–व्यवस्था, अपराध नियंत्रण एवं उग्रवादी स्थितियों में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। साम्प्रदायिक एवं जातीय सौहार्द कायम है। राज्य के नागरिक, विशेषकर व्यावसायिक वर्ग, अपना जीवन–यापन एवं व्यवसाय सुरक्षित एवं भयमुक्त माहौल में कर रहे हैं। कुख्यात अपराधकर्मियों को गिरफ्तार कर स्पीडी ट्रायल कर सजा दिलाने के कारण अपराध की स्थिति में उत्साहवर्द्धक परिणाम मिले हैं। थानों में आम जनता निःसंकोच कांड दर्ज करा रही है। पुलिस भी अनुसंधान, पारदर्शी एवं निष्पक्ष रूप से कर रही है। भ्रष्टाचार नियंत्रण, पुलिस–जनता संबंधों में सुधार आया है। महिलाओं, अल्पसंख्यकों एवं कमजोर वर्गों की सुरक्षा देने में पुलिस सफल रही है। पुलिस के आधारभूत संरचना, आधुनिकीकरण एवं खुफिया तंत्र को सुदृढ़ करने के कारण पुलिस प्रणाली में व्यापक सुधार परिलक्षित है।

तालिका–1

बिहार अपराध के आँकड़े (2004 से 2010)

वर्ष	हत्या	डकैती	लूट	फिरौती के लिए अपहरण	सड़क डकैती	सड़क लूट	बैंक डकैती	बैंक लूट
2004	3861	1297	2909	411	287	1875	30	27
2005	3423	1191	2379	251	244	1310	26	8
2006	3225	967	2138	194	211	1251	15	5
2007	2963	646	1729	89	151	1109	19	9
2008	3029	640	1536	66	146	897	16	7
2009	3152	654	1619	80	201	962	7	2
2010	3362	644	1538	72	207	1051	9	2

बिहार पुलिस की उपलब्धि (वर्ष 2001 से 2010 तक)										
व्यक्तिगत उपलब्धि / शीर्ष	2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010
गिरफ्तार अपराधी / अभियुक्तों की संख्या	114396	121204	102906	114206	146505	146231	153758	170921	182518	178894
अपराधियों के साथ पुलिस मुठभेड़ की संख्या	41	39	22	21	38	18	18	13	14	8
पुलिस मुठभेड़ में मारे गए अपराधियों की संख्या	30	35	14	26	42	15	21	12	5	5
नागरिकों के साथ अपराधियों के मुठभेड़ की संख्या	7	1	0	4	10	2	0	0	0	0
नागरिकों के साथ मुठभेड़ के दौरान मृत अपराधियों की संख्या	13	3	0	7	13	4	0	0	0	0
उपरोक्त मुठभेड़ों के दौरान घायल अपराधियों की संख्या	4	3	5	0	7	10	1	1	0	0
अवैध देशी अग्नेयास्त्रों की बरामदगी की संख्या	2992	2574	2440	2692	3516	2999	2264	2110	2356	2272
अवैध अग्नेयास्त्रों की बरामदगी की संख्या	206	166	176	155	258	195	151	94	77	76
बरामद कारतूस की संख्या	10837	7361	13214	10243	15023	15248	11745	30084	15500	23793
बरामद बमों की संख्या	530	301	126	126	2084	360	150	567	151	162
मिनीगन फैक्टरी के उद्भेदन की संख्या	25	31	40	45	77	29	20	25	41	20

1. स्वच्छ, पारदर्शी तथा उत्तरदायी प्रशासन के माध्यम से विकास, पंचायती राज संस्थाओं में धरातल पर प्रजातांत्रिक व्यवस्था तथा इनमें आरक्षण द्वारा महिला सशक्तीकरण के कारण विधि–व्यवस्था की स्थिति बेहतर हुई है। बिहार सरकार समाज के सभी वर्गो का आदर और विश्वास प्राप्त करने में सफल रही है एवं इससे राज्य में आंतरिक सुरक्षा के परिदृश्य में भी सुधार हुआ है ।

2. **विधि–व्यवस्था में सुधार:–** राज्य सरकार समाज में शान्ति एवं सुरक्षा स्थापित करने हेतु कटिबद्ध है। आम नागरिकों की अपेक्षाओं के अनुरूप राज्य में अपराध नियंत्रण एवं विधि–व्यवस्था कायम रखने में पुलिस द्वारा सराहनीय कार्य किये जा रहे हैं। हत्या, डकैती, फिरौती हेतु अपहरण एवं अन्य जघन्य अपराधों के नियंत्रण में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई है। लगातार साम्प्रदायिक सौहार्द कायम रहा है तथा राज्य में एक भी गंभीर साम्प्रदायिक घटना प्रतिवेदित नहीं हुई है। बिहार के लिए यह बड़े संतोष की बात है कि राज्य में वर्ष 2006 के पश्चात् कोई बड़ी साम्प्रदायिक घटना नहीं हुई है। 1989 के

भागलपुर दंगों के पीड़ितों को पर्याप्त मुआवजा मुहैय्या कराया गया है तथा पूर्व के बन्द कर दिये गये कांडों का अनुसंधान पुनः प्रारम्भ कर पर्याप्त साक्ष्य संकलन कर आरोप–पत्र समर्पित किया गया। तत्पश्चात ऐसे काण्डों का विचारण कराया गया है और दोषियों को अंततः सजा दी गई है। वर्ष 2006 से लेकर लगातार जातीय दंगों में भी उत्तरोत्तर कमी आई है। जिसके फलस्वरूप इस प्रकार की गंभीर घटनाओं में दो तिहाई कमी आई है।

सरकार के प्रयास से समाज के सभी वर्गो में सद्भाव का माहौल बना है। शांति व्यवस्था की स्थिति समान्य होने के साथ ही राज्य में चहुमुखी विकास का कार्य निर्विध्न रूप से चल रहा है जिससे जनमानस में पुलिस के प्रति एक सकारात्मक भावना देखी जा रही है। आम लोगों में सुरक्षा की भावना जागृत हुई है जिससे काफी हद तक अमनचैन कायम हो सका है। हमने शांति व्यवस्था को एक निरंतर प्रकिया मानते हुए इसमें दिन प्रतिदिन सुधार की अपेक्षा रखी है। कानून की नजर में सभी को समान रूप से न्याय मिल रहा है। मुझे यह कहते हुए काफी हर्ष हो रहा है कि सभी मापदंडों पर पुलिस खरी उतरी है और आवश्यक कार्रवाई दृढ़ता पूर्वक एवं बगैर भेद–भाव के कर रही है, जिस कारण आज रात्रि में भी आम नागरिक बेखौफ भ्रमण कर रहे हैं।

3. **अपराधिक स्थितिः–** विगत दस वर्षों का तुलनात्मक अपराध ऑकड़ा यह प्रदर्शित करता है कि हत्या, डकैती, लूट, फिरौती हेतु अपहरण, बैंक डकैती, बैंक लूट आदि जघन्य अपराधों में विगत पॉच वर्षों में लगातार काफी कमी आई है। वर्ष 2005 से 2010 तक कुल संज्ञेय अपराध, जो कि पुलिस थानों में पंजीकृत होते हैं, की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि इस बात का परिचायक है कि :–

(क) पुलिस थानों में कांड बिना किसी भेद–भाव के पंजीकृत किए जा रहे हैं।

(ख) पुलिस की सकियता के कारण कांडों के उद्भेदन में मिली सफलता (जाली नोट, मादक द्रव्य पदार्थों, आग्नेयास्त्रों, विस्फोटक पदार्थों की बरामदगी में हुई वृद्धि) अपराध के गंभीर शीर्षो यथा हत्या, डकैती, लूट, दंगा, फिरौती के लिए अपहरण, रोड लूट एवं रोड डकैती के कांडों में उत्तरोत्तर भारी कमी आई है, जो पुलिस के बहुमुखी प्रयास का फलाफल है।

(ग) पुलिस के सतत प्रयास के फलस्वरूप बलात्कार के शीर्ष में वर्ष 2007 की तुलना में कमी आई है। इस प्रयास को और कारगर बनाने हेतु नीति अपनायी गयी है और बलात्कार एवं दहेज हत्या के कांडों में भी जिला पुलिस अधीक्षकों द्वारा त्वरित विचारण अभियान चलाया गया है।